



मैं यहाँ तीन ऐसे लोगों के बारे में छद्मिदान्वेषण करूँगा जो हैं तो तीन अलग-अलग स्थानों के अवस्था और वय में भी थोड़े आगे-पीछे हैं और शक्ल-सूरत से तो शायद बलिकुल नहीं मिलते. यानी बाहरी तौर पर इन तीनों में ज्यादा समानता नहीं आती. पर आंतरिकतौर पर इन तीनों में कुछ ऐसा ऐंठपन, जदिदीपन और झकझीपना है कि कभी-कभी मुझे लगता है कि वहीं ये तीनों पछिले जनम के भाई तो नहीं हैं.

कहावत है कि "बर्ड्स ऑफ़ द सेम फ़ेथर फ़्लोक टुगेदर" अर्थात एक तरह के लोग आपस में इक्कठा हो जाते हैं. यह जरूर सही होगा क्योंकि यदि ऐसा नहीं होता तो भडि-मुरैना के अलोक तोमर, गाजीपुर-इलाहाबाद के यशवंत सहि और बोकरो-लखनऊ के अमतिभ ठाकुर कैसे धीरे-धीरे एक गोल बन जाते.

सबसे पहले बात करूँगा अलोक तोमर जी की, जो इन तीनों में सबसे वरिष्ठ हैं. गोल चेहरा, सांवल्ला रंग, सामान्य शक्ल-सूरत पर आँखों से झाँकती एक तीखी ज्योति जो उनकी लेखनी से कम तेज नहीं है. फ़ेसबुक पर इनकी जो तस्वीर लगी है उसमें विशेष तौर पर उनकी क्लम प्रमुखता से दिखाई देती है और यह ठीक भी है, क्योंकि इस व्यक्तिकी ताकत यही क्लम है जो उसके दिलो-दमाग से उभर कर आते वचारों और गुबारों के शब्दों में ढाल कर पाठकों तक इस रूप में पहुंचाता है कि पढ़ने वाला अर्ध-सम्मोहन की अवस्था में चला जाता है. यह सच है कि अलोक जी के देख कर बाहरी तौर पर कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता कि यह सीधा-शरीफ़ सा दिखने वाला आदमी इतना खोजी, खुराफ़ती और गहरे घाव करने वाला होगा कि उसका एक कशब्द लावे की तरह सीधे अंदर घुसता ही चला जाय. फिर उस आदमी की हम्मत भी ऐसी कि किसी अखबार का मालकिन नहीं है, वो कोई करो पति आदमी नहीं है पर कोई बात गलत लग जाने पर किसी से भी मल्ल-युद्ध करने के तैयार. इसी के साथ यारों के यार, दोस्तों के दोस्त- अंदर तक मानवीय अनुभूतियों से सराबोर.

कोई मुझसे पूछेगा कि यह बात मैं कैसे कह सकता हूँ जब मैं उन्हें ठीक से जानता तक नहीं, उनसे मिला तक नहीं और उनसे मेरा परिचय आज भी मात्र फ़ोन तक ही सीमति है, तो मैं यही कहूँगा कि कुछ बातों के समझने के लिये मिलने-जुलने और मेल-मिलाप की जरूरत नहीं होती. इंसानियत, अपनापन और इंसान का व्यक्तित्व बहुधा दिल से समझ में आता है, मात्र आमने-सामने बैठ कर बात-चीत करने से नहीं. अब देखिये उस आदमी की महानता. मैंने उनसे जुड़ा एक लेख लिखा — "आलोक तोमर और अच्छे-बुरे आदमी." मैंने इस लेख में अपनी तथाकथित नष्पकता दिखने के लिये अपने मन के सद्भावों के अतिरिक्त वह भी लिख दिया जो उनके प्रति स्पष्टतया हानिपरक और अनुचित था. मैंने इंटरनेट पर उनसे सम्बंधित एक दो लोगों के वचार देखे और उन्हें जस का तस प्रस्तुत कर दिया. उन पंक्तियों में अलोक तोमर जी के बारे में अत्यंत कठिनी और ननिदापरक भाषा में कुछ वचार लिखे गए थे और मैंने उन्हें हुबहू उतार दिया.

आप सोचिये उस आदमी की महानता, उसका बर्णन, उसकी मानवीय अनुभूतिक स्तर और उसकी सोच कि मेरे लेख के कुछ घंटों बाद ही खुद अलोक जी का फ़ोन आया. मेरा हाल-चाल पूछने के बाद उन्होंने मुझे अपने वचार रखने के लिये धन्यवाद दिया. साथ ही एक और बात कही— "अमतिभ जी, आपने कुछ अन्य बातें भी मेरे बारे में लिखी थीं. मैं नहीं कहता कि मैंने जीवन में कोई गलती नहीं की होगी पर मेरी आत्मा के इस बात का पूरा सुकून है कि मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया जिसके कारण मैं अपने-आप से मुंह छुपाने के मजबूर होऊँ." लगभग यही बात उन्होंने इस लेख से जुड़ी अपनी टिप्पणी में भी लिखी— "धन्यवाद अमतिभ कि तुमने मुझे सार्वजनिक वविचन के लिये प्रस्तुत किया. ठीक है, मेरा भी एक इतिहास है, लेकिन ऐसा नहीं है जिसके लिये मुझे शर्मिदा होना पड़े. मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया है जो मेरी आत्मा पर बोझ बना हो."

जब मेरी आलोकजी से बात हुई और जब मैंने उनकी यह बात देखी तो मुझे इस पर यकीन करने के लिए किसी तीसरे आदमी से किसी भी प्रमाण की जरूरत नहीं हुई, क्योंकि आदमी भले झूठ बोल ले पर उसकी आवाज और उसके शब्द झूठ नहीं बोल पाते. फिर इस लिए भी कि लगभग ऐसा ही कुछ दिनों पहले भी मेरे साथ हो चुका था, जब इस कहानी के कदमों से करिदार के साथ लगभग इसी प्रकार की मेरी वार्ता हुई थी. यह आदमी है भू इस के संस्थापक और क नयी वधि के अपनी पूरी ताकत के साथ सामने लाने वाले यशवंत सहि, जो दा-मूछ कटा लेने के बाद लगभग उतने ही शरीफ दखिते है जतिने अलोकजी, पर जब लिखने लगते है तो ऐसा कि कसिके अंदर कहां तक घुस जा, इसकी कोई सीमा नहीं है.

हुआ यह था कि उस समय यशवंत भाई से मेरा संपर्क तो हो चुका था, पर अभी दोस्ती के परवान च ने में देर थी. हमारी संस्था ने उन्हें सपी सहि पत्रकारिता पुरस्कार दिया था और इस अवधि में हमारी लंबी मुलाकतें भी हुई थीं. उसी दौरान उनके दिल्ली वापस जाने के बाद मुझे दो-तीन मतिरों ने अपनी ओर से फोन करके कहा कि आपने यह क्या किया, आप यशवंत के नहीं जानते, वह बहुत ऊँची ची है. लोगों के डरा-धमक कर पैसे बनाता है, बलैकमेलर है और ना जाने क्या-क्या. फिर क आदमी ने लगभग यही बात ई-मेल से कही. चूँकि पछिले कुछ दिनों में यशवंत भाई से इस कदर अपनापन हो गया था कि मैं ये बातें सुन कर काफी व्यथित हो गया. मुझे कतई अचछा नहीं लगा था कि यशवंत भी वैसा ही नकिसे जैसे तमाम और लोग है. मैंने उस मेल के पढ़ते ही यशवंत भाई के क ई-मेल भेजा जिसमे उन पर बता जा रहे आरोप के बताते हु उनसे मात्र यही जानना चाहा कि वे चाहें तो मुझे हकीकत बता और चाहें तो इस मेल के भूल जा.

मैंने यह मेल सुबह लिखी थी और मुझे लग रहा था कि शाम तक जवाब आ गा क्योंकि यशवंत बाबू देर से सोते होंगे और देर से जागते होंगे. मुझे घोर आश्चर्य हुआ जब उनका मेल लगभग पलक झपकते ही मलि गया. उन्होंने भी लगभग वही बात लिखी थी जो आलोकजी ने फोन या अपनी टिपिणी में कही थी. सा लिखा कि वे भगवान नहीं है, यह भी नहीं है कि वे मोरालटि के अंतमि प्रतनिधि है. पर इतना जरूर है कि उनकी अपनी लक्ष्मण रेखा है, जिन्हें वे किसी भी दशा में नहीं लांघ सकते. फिर उन्होंने इस कथा के तीसरे पात्र यानी अमतिभ ठाकुर के बारे में कुछ बातें कही जो लगभग उन्हीं आरोप से मलिते-जुलते थे, जो अमतिभ ने बारी-बारी से इन दोनों पर लगा थे. कहा कि जब मैं अवारड कार्यक्रम में लखनऊ में था तो कसे अधिक लोगों ने मुझे ऐसी बातें आपके बारे में कही जो किसी भी प्रकार से प्रशंसनीय नहीं कही जा सकतीं. कुछ लोगों ने तो स्पष्ट और कूर शब्दों में आपकी कटु आलोचना की थी, पर मैंने आपसे इस बारे में कुछ नहीं कहा क्योंकि हर व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति के बारे में खुद नरिणय करना प ता है कि वह उसकी नगिह में वैसा है, यह भी कहा- “यदि मैं चाहता तो आपके सारे आरोपों के क लाइन में यह कह कर खत्म कर देता कि इनमें कोई सच्चाई नहीं है. पर चूँकि आपकी बातों में अपनापन दिखा इसी लिए मैं अपने आप के वसितार से उत्तर देने से रोक नहीं सक.”

यही सच है. दुनिया में कोई भी आदमी ऐसा नहीं होता जो दूध की तरह झलिमलियाता हुआ हो और इतना धवल हो कि उस के दामन में दूढ़ने पर भी दाग नहीं मलिं. अधिकतर मामलों में इंसान का स्वरुप अच्छे और बुरे के कमशिरण से मलि हुआ ही होता है. पर मेरी नगिह में हर वह आदमी दूसरों से अचछा है जो कम से कम अपने साये से झूठ नहीं बोलता, अपने आप के धोखा नहीं देता और यथासंभव अपने-आप के अपने अतीत से सीख लेते हु आने वाले कल के लिए बेहतर बनाने के प्रयास में लगा रहता है. सच मानें, आप दुनिया के धोखा दे सकते है, अपने आप के नहीं. इस रूप में अपनी-अपनी हकीकत और अपनी-अपनी असलथित से रू-ब-रू होते हु इन तीन लोगों की कहानी कहने के पीछे मेरा क उद्देश्य यदि इन तीनों के समरूप परदिश्य में प्रस्तुत करना है, तो असल व्यापक उद्देश्य यह है कि अपने अस्तित्व से संघर्षरत इन तीनों की इनकी अदम्य इच्छा-शक्ति, कुछ अचछा कर सकने की मंशा और सतत बेहतरी के ध्येय के अन्य लोगों के लिए भी उदाहरण के रूप सामने रख सकूँ.

यदि इस कर्य में कुछ गलत स्व-प्रशंसा हो गयी है या इन दोनों साथियों की ऐसी तारी हुई है, जिससे आपमें कोई इत्तेफक नहीं रखते तो इसके लिए क्षमाप्रार्थी नहीं हूँ क्योंकि मैंने वही बात कही है जो मुझे सही लगी है.

□□□□, □□□□□□, □□□□□□□□ - □□□□□□ □□□□ □□

Written by अमतिभ ठाकुर

Saturday, 25 December 2010 18:47

---

□□□□□□□□ □□□.